१०२. मानव प्रगतिशील है

२१-०९-२०१३

मानव प्रगतिशील होने का प्रमाण, परम्परा रूप में विकसित चेतना ही है | विकसित चेतना, जीव चेतना से भिन्न होना पाया गया | इसे भले प्रकार से अनुभव करके देख लिया, जी के लिया | विकसित चेतना अनुभवमूलक विधि से सह-अस्तित्व का प्रमाण होना महत्त्वपूर्ण बिंदु है; जिसे कोई भी समुदाय का मानव सोचा नहीं, बताया नहीं | सह-अस्तित्व होना ही ज्ञान है | होने के रूप में सह-अस्तित्व | चारों अवस्था सह-अस्तित्व में ही विकसित हुआ है | इसको भले प्रकार से स्पष्ट किया है | विकल्प में स्पष्ट हुआ | विकल्प भौतिक विचार, आदर्श विचार का स्थान पर प्रभावशील होने के लिये प्रस्तुत किये हैं | इसको हर देश कालीय मानव अपनाना स्वाभाविक है | इसे अभी तक अपनाया जा रहा है | आगे जैसा हो | मानव ही सच्चाईयों को स्वीकारता है | सच्चाई का प्यास हर मानव में निहित है | सच्चाई केवल सह-अस्तित्व ही है | इस क्रम में सोच विचार करना एक आवश्यकता हो गयी है; क्योंकि मानव व्यक्तिवादी, समुदायवादी विचारों में पनपा है | इससे अर्थात व्यक्तिवाद, समुदायवाद से अपराध प्रवृत्ति और भ्रम प्रवृत्ति दूर नहीं हुआ | इसे दूर होना इसलिए आवश्यक है, धरती के साथ किये जाने वाले अपराधों से मुक्ति पाने के लिये | धरती से होने वाले अपराध ही मनुष्य को इस धरती से दूर करता जा रहा है |

यह झूठ, फरेब के साथ शुरूआत हुआ जीव चेतना में जीता हुआ आदमी झूठ, फरेब का आदी है | झूठ, फरेब ही अपराध और भ्रम के रूप में होना देखा गया | अपराध–संघर्ष और युद्ध के रूप में होना पाया गया है, जिसको सर्वोपरि विकास माना जा रहा है भौतिक वाद में | इस क्रम में इस अध्ययन से अर्थात भौतिकवादी अध्ययन से अपराध-मुक्त होना सम्भव नहीं हुआ | अपराधिक पक्ष में सरकार न होते हुए भी विरोध दोनों पक्ष से होने लगा | सरकार को नहीं चाहने वाला, सत्ता को चाहने वाला | दोनों पक्ष में बंदूक, बारूद, मिसाइल हाथ लग गयी | इस विधि से मानव क्या होगा, केवल अपराध करने में प्रवृत हुआ | अपराध पक्ष में सहमत होना सहज रहा | इस विधि से हर मानव अपराध के पक्षधर हुआ | उन्माद पहले से रहा | पहले से आदर्शवाद रहा | आदर्शवाद के सहमति से भौतिकवाद शुरुआत हुआ इतिहास के अनुसार | शनैः-शनैः भौतिकवाद स्वतन्त्र हो गया | आदर्शवाद को नकार दिया | इससे अपराधोन्मुख हो गया | अपराध अर्थात संघर्ष और युद्ध, ज्यादा पैसा के आधार पर हुआ | पैसे के बारे में सोचा गया, जंगल का नाश करते हुए कागज बनाना | कागज को छापाखाना में रंग देना, जिसको पैसा माना, इससे बढ़ कर भ्रम क्या होगा | नोट को खाकर कोई भी आदमी जीवित नहीं रह सकता |

खाएगा केवल धरती से बना हुआ अनाज, धरती से बना हुआ जीवों को | जीवों को खाकर के माँसाहारी हुआ | अनाजों को खाकर के शाकाहारी हुआ | दोनों प्रकार के आहार परम्परा में प्रचलित हैं | इसे बचपन से बुढ़ापे तक देखना बनता है | चारों अवस्था का अध्ययन करने से यह पता लगता है कि मानव शाकाहारी है | मानव शाकाहारी होने में तीन प्रकार से मापदंड रखा है | एक तो बनावट नाखून और दाँत का, दूसरा आँत, तीसरा प्रवृत्ति, कैसा अभ्यास हुआ | तीन मापदंड से पता लगता है ये मानव का नहीं है अर्थात मांसाहार मानव का नहीं है, जीवों में अभ्यास है | जीवों में कुछ जीव ही ऐसे हैं जो मासाहरी हैं, ज्यादातर शाकाहारी हैं | ये सब का आँकलन हर मानव स्वीकार सकता है | स्वीकारने से मानव शाकाहारी होना पता लगता है | बनावटी विधि से नाखून और दाँत, माँसाहारी जीवों का अलग ढंग से होता है, शाकाहारी जीवों का अलग ढंग से | दूसरा आँतों की बनावट में अलग होता है अर्थात माँसाहारी जीवों का आंते छोटा होता है | शाकाहारी जीवों का आँते लम्बा होता है |

तीसरा मानव का संकेतों को अथवा मानव का संकेतों में से कुछ भाग को अर्थात सम्भाग को सुन लेते हैं | आदिकाल से ही जीवों से श्रम कराना मानव जानता ही है | इस विधि से जीव मानव का श्रमशीलता के सम्बंध में कुछ सुनता है, कुछ जीव इसके लिये तैयार होते हैं, कुछ जीव नहीं तैयार होते हैं | माँसाहारी जीवों को श्रमशीलता के पक्ष में अर्थात पूर्णतः अर्थात शुद्ध रूप में माँसाहारी जीव परम्परा में जीते हुए देखने को मिलते हैं, वे मानव का श्रमशीलता के पक्ष को सुनते नहीं | सुनता हुआ अभी तक देखा नहीं गया | मानव का कल्पना सबको सुनाने की है | इस क्रम में यह संशय बना रहता है मानव जात में | माँसाहारी जीव शुद्धतः माँसाहार ही करते हैं | इसीलिये ये श्रम के पक्ष में नहीं हैं | इसी क्रम में भौतिकवादी विचार अभी के संदर्भ में श्रमशीलता से मुक्त होना चाहता है | यंत्रों से श्रम करना भरोसेमंद माना | इसी विधि से मानव श्रमशीलता से दूर होता गया |

मैं स्वयं श्रमशील परिवार का व्यक्ति हूँ | घोर श्रम, घोर विद्वता, घोर रूप में किये जाने वाली सेवा | ये तीनों प्रकार की कार्यक्रम हमारे परिवार में होता रहा | हमारा परिवार जो सेवा किया, उससे ज्यादा सेवा करना बनता नहीं | हमारा परिवार जितना विद्वान मानता रहा, उससे ज्यादा मानना नहीं बनता | जितना श्रम करता रहा जितना श्रम कराता रहा, उससे ज्यादा श्रम करना बनता नहीं | इसीलिये हम विपन्नता का अनुभव नहीं किये | विपन्नता, खाने पीने के लिये मोहताज होने से है | अभी जितने भी व्यापार करते हैं, नौकरी करते हैं इनमें विपन्नता बना रहता है कि नहीं बना रहता, देखने की बात है | इसका शोध करने से पता लगता है मानव जात ज्यादा तरीके से विपन्न है | फलस्वरूप में व्यापर में द्रोह चिंतन करता है | सारा झूठ, फरेब, भ्रम व्यापार से ही होता है | इसे भले प्रकार से शोधा है, देखा है, समझा है और जिया है | इससे मुक्त होकर के जिया है | इस विधि से मानव शुद्ध रूप में कैसा जिया जा सकता है, वह प्रमाणित हुआ |

शुद्ध रूप में जीने के लिये तीन प्रमाण सिद्ध हुआ- अनुभव प्रमाण, विचार प्रमाण, व्यवहार -कार्य प्रमाण | इन तीनों प्रमाण को संयुक्त रूप में मानव चेतना नाम दिया | ऐसी मानव चेतना विधि से ही मानव न्यायपूर्वक जी पाता है, धर्मपूर्वक जी पाता है, सत्यपूर्वक जी पाता है | सत्यपूर्वक जीने वाली अर्थात अनुभवमूलक प्रमाण विधि से जीने वाली कार्य-कलाप को दिव्य मानव चेतना कहा | दिव्य मानव चेतना अर्थात अनुभव सम्मत विचार विधि से देव चेतना प्रमाणित होता है | देव चेतना विधि सम्मत कार्य व्यवहार विधि से मानव चेतना प्रमाणित होता है | इस विधि से विकसित चेतना ही तीनों स्वरूप में इकट्ठा होता है | अविभाज्य हैं ये, विभाजित किया जा नहीं सकता | अध्ययन विधि से विकसित चेतना का ज्ञान एवं आचरण, अनुभव में तीनों चेतना समाये हैं, अनुभव मूलक विधि से इनका प्रमाण होता है | विकसित चेतना होता है तीनों विधि से- मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना रूप में | इन तीनों प्रकार की चेतना ही प्रमाण रूप में जब प्रमाणित होता है परम्परा में तब अखण्ड समाज होता है | अखण्ड समाज विधि से ही सार्वभौम व्यवस्था होता है | इसी से धरती में मानव अपराध-मुक्त होकर व्यवस्था में जीना बनता है; जिसमें मानव शाकाहारी होना निश्चित होता है |

श्रमपूर्वक ही शाकाहारी व्यवस्था बन जाता है | इस क्रम में जीने से अपराध-मुक्त होना स्वाभाविक है | यही धरती पर रहने का एकमात्र उपाय है | इसी को अंग्रेज़ी में कहते हैं ग्लोबल वार्मिंग | ग्लोबल वार्मिंग होने से धरती पर आदमी रह नहीं पाएगा, ये भी कह रहे हैं | इस क्रम में मानव धरती के विपरीत कर्म करना छोड़ने की आवश्यकता आ गयी है | धरती को बिगाड़ कर मानव जी नहीं पाएगा | ये तो भले प्रकार से स्वीकारा जा सकता है | धरती बिगड़ने का काम बारूद, परमाणुऊर्जा सम्पन्नता के कारण ही है | परमाणुओं काऊर्जा में परिवर्तित होना सम्पूर्ण प्रदूषण का आधार हुआ | प्राकृतिक विकृति यही है | मानव ही प्रकृति को विकृत करता है; न जानवर करते हैं, न वनस्पति संसार करते हैं, न स्वयं पदार्थ संसार | मानव ही

न्युक्लियर फिसन विधि से निश्चित प्रजाति के परमाणुओं कोऊर्जा में परिवर्तित करता है | ऊर्जा को पाकर अपने को बड़ा सफल मानता है | ये सब बातों को देखने से पता लगता है, मानव ही सम्पूर्ण भ्रम और अपराध का आधार है | सामान्य बुद्धि से सोचने पर भी यह पता लगता है, मानव ही ऊटपटांग रूप में सोचा है | फलस्वरूप व्यक्तिवाद, समुदायवाद तक पहुँचा है | समाजवाद तक पहुंचना शेष है | मानव ही सामाजिक होना शेष है | चींटी से हाथी तक सभी जीव, बाघ से गाय तक, मिट्टी से मानव तक सभी अपनी जात को पहचानता है, समुदाय को पहचानता है | व्यक्ति के रूप में पहचान बनाना चाहता है मानव जात | व्यक्ति के रूप में पहचान अल्पकालीन होता है | इसीलिये इसका निश्चितता होता नहीं | कल्पना में राम जैसे, कृष्ण जैसे, रघु जैसे व्यक्तियों का कल्पना दिया है |

अवतारी कहां हैं? ये सब होते हुये मानव परम्परा बना नहीं; सामान्य व्यक्ति से भिन्न होने से ऊपर कहे तीनों प्रकार के व्यक्ति भिन्न होने से नहीं हो पाया अथवा भिन्न प्रकार से कार्य किया इसीलिये भिन्न माना गया | इनका पूजा पाठ करना सोचा जिससे मानव जात में सुख, शांतिपूर्वक जीने का विधि हो यह आशय व्यक्त हुआ | विधि निकला नहीं | इसे मानव परम्परा ही करेगा | इसी आधार पर विकल्प प्रस्तुत है | विकल्प विधि से ही मानव, मानव चेतना विधि से ही जी पाना एकमात्र उपाय है जिसका स्वीकृति सम्भव हो गया है | प्रस्तुति हो गयी,इसीलिये सम्भव हो गया | इस क्रम में मानव, मानव चेतना पूर्वक जीना जरूरी है | यह इसलिए आया; अपराध-मुक्त, भ्रम-मुक्त होना आवश्यक रहा | भ्रम और अपराध विधि से ही मानव प्रकृति विरोधी अर्थात भौतिक वस्तु विरोधी कार्य किया | भौतिक रूप में ही धरती है | धरती कुपित होना स्वीकारा गया | ग्लोबल वार्मिंग जिसे कहा है अंग्रेज़ी में | ग्लोबल वार्मिंग का मतलब धरती तापग्रस्त होने से है | तापग्रस्त होने का समझ केवल मानव में ही है | तापग्रस्त होने का कारक व वाहक मानव ही है | इस क्रम में मानव ही अपराधी होता है |

इसको हर व्यक्ति स्वीकार सकता है | जानकार, अनजानकर अपराध करना ही परिणाम रूप में धरती तापग्रस्त होने का आधार हुआ | अभी तक ४ डिग्री ताप बढ़ गया | बताते हैं ४ डिग्री ताप और बढ़ने से धरती पर आदमी नहीं रहेगा | बढने का सम्भावना बना है, यह भी कहते हैं | इस धरती को छोड़ कर के जीने के लिये भांति- भांति बातें बताते हैं | सभी बात धरती को छोड़ कर के जीने की है | इससे अर्थात इस परेशानी से मुक्ति पाने के लिये विकल्प को प्रस्तुत किया | मानव धर्म, न्यायपूर्वक जीने, धर्मपूर्वक जीने, सत्य सहज जीने के लिये विकल्प को प्रस्तुत किया | यह अध्ययन विधि से सफल होना बताया | विकल्प रूप में प्रस्तुत करने में जो साधना, समाधि, संयम हुआ वह भी अध्ययन ही है | अध्ययन के बिना कोई संयम अर्थ नहीं है | चमत्कार अध्ययन नहीं है, जीने का विधि अध्ययन है | चमत्कार से पूजा पाठ ही होता है |

दक्षिणा विधि ही आता है, जिसको हमने अनुभव करके देखा है | पूजा पाठ वाला भाग को हमने भले प्रकार से देखा है | खूब दक्षिणा लेकर के भी देखा है | उससे समाज बनता नहीं, “लाभे लोभोपजायते ”-बिना श्रम से लोभ प्रवृत्ति बढा, यह मैंने अनुभव किया | इसलिये श्रमशीलता के पक्ष में बात किया | दूसरा विधि यही हो सकता है- द्वेष विधि | श्रम करने वालों से द्वेष करने के लिये जीना | इस विधि से जीने से ही कोई शांति मिलने वाला नहीं है | सुख, शांति के बिना मानव अपने में संतुष्ट होना बनता नहीं; किसी काल में, किसी देश में हो |

मानव सुख, शांतिपूर्वक जीने के लिये धरती को स्वस्थ रखना आवश्यक है | धरती स्वस्थ नहीं रहेगा, तब मानव रहेगा कहाँ? इसी संकट परिहारार्थ विकल्प को रखा है | विकल्प विधि से न्यायपूर्वक जीना बनता है | विकल्प विधि से ही धर्मपूर्वक जीना बनता है | विकल्प विधि से सत्यपूर्वक जीना बनता है | हर व्यक्ति में अनुभव, विचार, व्यवहार-कार्य को पहचाना है | इसी विधि से जीने से मानव सुख, शांतिपूर्वक जी पाता है | फलस्वरूप संतोष, आनंदपूर्वक जीना मानव को अखण्डता, सार्वभौमता के रूप में देखा गया | दूसरा विधि से जीना बनता नहीं |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

-ए. नागराज